देश की एकता के लिए हिन्दी आवश्यक : गिरीश्वर मिश्र

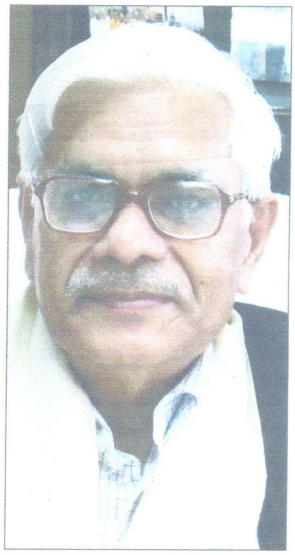

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय अब शोध एवं कौशल विकास पाठ्यक्रमों के जरिए अपनी अलग पहचान बना रहा है। शैक्षणिक गतिविधियों एवं कई राष्ट्रीय मुद्दों पर हिन्दुस्तान ओपिनियन के संवाददाता बिमलेश की कुलपति गिरीश्वर मिश्र से खास बातचीत

महात्मा गांधी अं.हि.वि.वि. वर्धा के अकादमिक विकास में आप प्रमुख रूप से किन-किन पहलुओं पर विशेष जोर दे रहे है?

गिरीश्वर मिश्र : किसी भी विश्वविद्यालय का महत्व और योगदान उसके अध्ययन और ज्ञान शोध के स्तर पर निर्भर करता है। अध्ययन को और मजबूत कर अध्ययन का सक्रिय वातावरण तैयार कर और नये विषय जो प्रसांगिक हो उसे बढ़ावा देना है। साथ ही छात्रों का अधिक से अधिक कौशल विकसित कर उन्हें किताबी ज्ञान के साथ-साथ प्रयोगात्मक ज्ञान में भी परिपूर्ण कर ज्ञान एवं कौशल का विकास करना है। ताकि कार्य और नौकरी में किसी भी प्रकार की बाधा न आ सके। ज्ञान जीवन में पैदा किया जाता है जो परिस्थितियों से सीख मिलती है। जो महत्वपूर्ण है हम चाहेंगे कि ऐसी व्यवस्था बने जिसमें अध्ययन और प्रयोगिक दोनों महत्वपूर्ण हों इसके साथ ही सामाजिक एवं संस्कृतिक भी सक्रिय हो इसके लिए वर्धा संस्कार प्रकोष्ट का गठन किया गया है।

शोध की बढ़ावा देने के लिए आपकी क्या कार्य योजना है?

गिरीश्वर मिश्र : यहां शोध के विभिन्न विषय जैसे- जनसंचार, नाटक कला, स्त्री अध्ययन, डायास्पोरा, सामाजिक कार्य, अहिंसा एवं शांति अध्ययन आदि विषयों के पाठयक्रमों को बढ़ावा देने के साथ ही अंतर अनुशासिक शोध से छात्रों एवं शिक्षकों को जोड़ने का मौका मिले और शोध पत्रिका और पुस्तकों को बढ़ावा मिले नई जानकारी का उपयोग हो आंतरिक शोध हेतु पाठयक्रम को मजबूत किया गया है। शोध के पाठयक्रम में सुधार कर छात्रों को समय और स्वतंत्रता को बढ़ावा दिया जा रहा है।

म.गां.अं.हि.व.वि. के शोध पत्रिका के बारे में आपकी क्या योजना है?

गिरीश्वर मिश्र : हमारे यहां बहुवचन, पुस्तकवर्ता पत्रिका निकलती है जिसमें साहित्य एवं लेखन विशेष हैं। अब उसे शोध की दिशा में ले जा रहे है। संभावना की तलाश कर रहे हैं। जो शोध पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जाय जो शोध मौलिक एवं प्रसागिंक हों हमारा प्रयास यह रहेगा।

बिमलेश : नए सत्र में किन-किन विषयों की पढ़ाई शुरू की जा रही है?

गिरीश्वर मिश्र : नये सत्र से मनोविज्ञान, शिक्षा शास्त्र विषय की शुरूआत की जाएगी। साथ ही हमारे कलकत्ता और इलाहाबाद केंद्र में एम. फिल और डिप्लोमा के पाठयक्रमों की शुरूआत की गई है।

बिमलेश : म.गां.अं.हि.व.वि. वर्धा को हिंदी को बढ़ावा देने के लिए स्थापित किया गया है पर हिंदी को लेकर हमारे देश में ही विरोध हो रहे है तो आपके दृष्टिकोण से कैसे अंतराष्ट्रीय पटल पर ले जाने का प्रयास है?

गिरीश्वर मिश्र : देखिए जब भाषा को लेकर विचार होता है तो राजनीति हो जाती है। कुछ लोग विरोध करते हैं और कुछ लोग समर्थन करते हैं। लेकिन मेरा मानना है कि ज्ञान और शोध में विरोध नहीं होना चाहिए। भारत के बहुत बड़े क्षेत्र में हिंदी भाषा बोली जाती है, जो लगभग 40 फीसदी भाग में हिंदी बोलने और समझने वाले लोग हैं। यहां के कई महानगरों में भी हिंदी सक्षम भाषा के रूप में बोली जाती है इसलिए भारत के क्षेत्रों में हिंदी की भूमिका महत्वपूर्ण होगी, हिंदी में जैसा लिखा जाता है वैसा ही उच्चारण भी किया जाता है और हिंदी को काफी सोच-विचार कर राज्यभाषा का दर्जा दिया गया है। हिंदी भाषा ने भारत को स्वतंत्र कराने में भी महत्वापूर्ण योगदान दिया है, यह देश की एकता के लिए बेहतर माध्यम हो सकता है, इसके लिए जरूरत है कि हिंदी को बढ़ावा दिया जाए और सशक्त भी बनाया जाए।

राष्ट्रीय हिंदी संसाधन केंद्र को सकार करने के बारे में झक्या योजना है?

गिरीश्वर मिश्र : यह एक योजना है जिसका अधार वर्धा में उपलब्ध है। हमारा प्रयास होगा कि उस अधार को समृद्ध करने में प्रसाशनिक कुछ सहयोग मिले। इसके कुछ प्रस्ताव शासन से अनुरोध करेगें कि बड़े केंद्र पर विकसित हों तथा इसके साथ ही कई योजनाओं को सकार किया जा सके।

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को स्थापित करने में विश्वविद्यालय की भुमिका?

गिरीश्वर मिश्र : संयुक्त राष्ट्र संघ एक राजनीतिक संगठन है, उसके लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश की स्थिति विशेष महत्वपूर्ण होती है। वहां स्थान मिले। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहल का प्रयास है यह विदेशों में भी प्रचार-प्रसार करने का कार्य करता है। जो कार्य कर रहा है, वह विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित करता है। इस दिशा में सहमति बनाने का मेरा प्रयास चल रहा है।